14. दादी जी के महावाक्य

बाबा कहते, मेरे में कोई तमन्ना नहीं है। परन्तु सेवार्थ वा दूसरों के कल्याणार्थ बापदादा अपने बच्चों को अपने समान देखना चाहते हैं। बाबा की जो महिमा वा टाइटल है, उन सबके आगे बाबा ने हम बच्चों को मास्टर शब्द दिया है। खुद नॉलेजफुल है, सर्वशक्तिवान है, प्यार का सागर है तो हमें भी सबमें मास्टर बनाया हैं परन्तु इस बात में कभी नहीं कहा कि ''मैं विश्व का मालिक हूँ, तुम मास्टर विश्व के मालिक हो।'' हमें डायरेक्ट कहा कि तुम सभी देवी–देवता बनते हो। देवी–देवता का अर्थ ही है, सम्पन्न बनना। विश्व का मालिक खुद नहीं बनता, वह हमें बनाता है। वह तो हमारा भविष्य है परन्तु सम्पन्न स्थिति हमारी संगम की है।

सम्पन्न स्थिति का सैम्पल हमारा मीठा बाबा है जिसने हमें हर बात में सम्पन्न बनकर दिखाया। उसने हमें मास्टर नहीं कहा लेकिन कहा, जैसा मैं बनता वैसे तुम बनो। उस बाबा ने हमें काँटों से कली, कली से फूल बनाया है। साकार बाप ने कदम–कदम श्रीमत पर चलकर दिखाया। हमारे सम्पन्न बनने में अभी कितना परसेन्ट देरी है?

साकार में कहा मैं सेवाधारी हूँ, मैं निमित्त हूँ। ऐसे ही तुम बच्चे भी सेवाधारी हो, निमित्त हो। हम निमित्त बने हुए बच्चे खुद से पूछते हैं कि हम क्या करते हैं! बाबा हम बच्चों को सिखलाने के लिए याद का चार्ट रखता। बाबा कहता, मैं भी याद का पुरुषार्थ करता हूँ। बाबा कहता, मैं भी पुरुषार्थी हूँ, सम्पन्न बनेंगे तो कर्मातीत हो जायेंगे। हम कहते, बाबा आप तो उसके साथ बैठे हैं।

जब बाबा भी कहता, मैं याद के चार्ट पर इतना अटेंशन देता हूँ तो हम भी देखें कि हमारा चार्ट इतना ही अन्दर गहरा जा रहा है? हमारी अन्दरूनी योग की स्थिति बहुत मीठी गहरी होती जाती है? यही हमारा आदि–मध्य–अन्त का पुरुषार्थ है।

ओम् शांति।